Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
April to June 2025, E-Journal, Vol. I, Issue L (50), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र की जनजातीय बालिकाओं में उपलब्धि अभिप्रेरणाओं का तुलनात्मक अध्ययन

ज्योति कुँवर राजपूत* डॉ. गुणबाला आमेटा**

* शोध छात्रा (शिक्षा) जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय,उदयपुर (राज.) भारत
** सहायक आचार्य, लोकमान्य तिलक शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, उदयपुर (राज.) भारत

शोध सारांश – प्रस्तुत शोध पत्र उदयपुर जिले के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र की जनजातीय बालिकाओं में उपलब्धि अभिप्रेरणा के अध्ययन पर आधारित है। जनाजातीय क्षेत्र में उपलब्धि अभिप्रेरणा का स्तर औसत से कम पाया गया। ग्रामीण क्षेत्र की जनजातीय बालिकाओं की तुलना में शहरी क्षेत्र की जनजातीय बालिकाओं में उपलब्धि अभिप्रेरणा का स्तर औसत पाया गया। जनजातीय क्षेत्रों में शहरी एवं ग्रामीण दोनों ही क्षेत्रों में औसत से अधिक उपलब्धि अभिप्रेरणा का अभाव बताता है कि जनजातीय बालिकाओं में इसे बढ़ाने की महती आवश्यकता है। ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र की जनजातीय बालिकाओं में उपलब्धि अभिप्रेरणा के तुलनात्मक अध्ययन करने पर टी के मान से पता लगता है कि दोनों में सार्थक अन्तर है। शोध के पहलु को देखकर शिक्षा में बालिकाओं को आगे बढ़ाने के लिए अधिक प्रयास किये जाऐगें। शिक्षा के स्तर में उच्चता को पाने के नये लक्ष्यों का निर्धारण होना चाहिए।

शब्द कुंजी – उपलब्धि अभिप्रेरणा, जनजातीय बालिकाऐं, जनजातीय क्षेत्र।

प्रस्तावना – किसी भी देश के विकास के लिए शिक्षा व्यवस्था बहुत बड़ा योगदान देती है। शिक्षा के द्वारा ही राष्ट्रीय लक्ष्यों को पूरा किया जा सकता है। एक सफलता के साथ दूसरी सफलता प्राप्त की जा सकती हैं। पहली वाली सफलता से हम अपनी दूसरी सफलता को अधिक उच्च स्तर पर प्राप्त कर पाते है। उपलब्धि अभिप्रेरणा ही एक ऐसा आयाम है जिसके द्वारा बालक निरंतर प्रतिभाशाली होकर अपने जीवन के लक्ष्यों को प्राप्त करते है। भारत की कक्षाओं में देश का भविष्य तैयार हो रहा है यह बात शिक्षाविद् डी.एस. कोठारी द्वारा कही गयी। वर्तमान दौर में देखा जाऐ तो भारत की कक्षाओं में वैश्विक स्तर के विद्यार्थी तैयार हो रहे है। भारत जहां विविधता है। कई राज्य, कई भाषाऐं, कई जातियां उप जातियां, कई क्षेत्र है लेकिन सभी शिक्षा के सुत्र से बंध गए है। जनजातीय क्षेत्र में भी आज शिक्षा का विकास हुआ है। खासतौर पर देखा जाऐ तो आजादी के बाद बालिकाओं की शिक्षा पर लगातार कार्य करने से बालिकाओं की शिक्षा में सुधार हुआ। बालिका शिक्षा से समाज में शिक्षा का विस्तार हो पाया है।

उपलब्धि अभिप्रेरणा द्वारा बालिका शिक्षा में अधिक सुधार हो पाया है। ग्रामीण क्षेत्र में बालिका शिक्षा हेतु प्रोत्साहन, साईकिल वितरण ऐसे कई पहलू है। ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र की जनजातीय बालिकाओं में उपलब्धि अभिप्रेरणा का पता लगाने के लिए शोध कार्य किया गया है। तुलनात्मक अध्ययन से ही सटीक जानकारी पता चलती है। शोध की दृष्टि से पता चलता है कि समान प्रोत्साहन देने पर भी जनजातीय क्षेत्र की बालिकाओं में उपलब्धि अभिप्रेरणा का स्तर औसत से कम पाया गया।

शोध प्रश्न:

1. क्या जनजातीय क्षेत्र की बालिकाओं में उपलब्धि के प्रति अभिप्रेरणा होती है?
2. क्या ग्रामीण व शहरी क्षेत्र की बालिकाओं में उपलब्धि के प्रति अभिप्रेरणा समान पाई जाती है?

शोध उद्देश्य:

1. जनजातीय क्षेत्र की ग्रामीण एवं शहरी बालिकाओं की उपलब्धि अभिप्रेरणाओं का अध्ययन करना।
2. जनजातीय क्षेत्र की ग्रामीण एवं शहरी बालिकाओं की उपलब्धि अभिप्रेरणाओं में तुलना करना।

शोध परिकल्पना:

1. जनजातीय क्षेत्र की ग्रामीण व शहरी बालिकाओं की उपलब्धि अभिप्रेरणाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध परिसीमन:

1. शोधकार्य को उदयपुर जिले तक सीमित रखा गया।
2. शोधकार्य को कक्षा 11 की बालिकाओं तक सीमित रखा गया।
3. शोधकार्य को उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों तक सीमित रखा गया।

न्यादर्श चयन : उपर्युक्त शोध हेतु यादृच्छिक प्रतिचयन विधि द्वारा न्यादर्श चयन किया गया जो इस प्रकार है :–

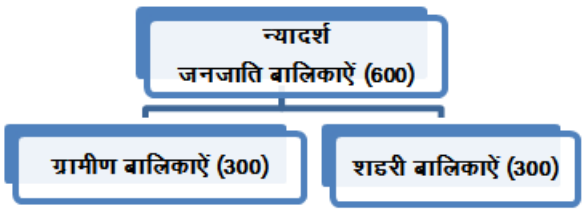

प्रस्तुत शोध हेतु शोधार्थी द्वारा उदयपुर जिले के जनजातीय क्षेत्र के उच्च

माध्यमिक स्तर के विद्यालयों से कुल 600 बालिकाओं का चयन किया जायेगा जिसमें से 300 बालिकाएँ ग्रामीण व 300 बालिकाएँ शहरी क्षेत्र से चयनित की गई।

शोध विधि, प्रविधि, उपकरण:

1 **शोध विधि:** इस शोध में ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र की जनजातीय बालिकाओं में उपलब्धि अभिप्रेरणाओं के तुलनात्मक अध्ययन हेतु शोधकर्त्ता ने सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

2 **शोध प्रविधि:** प्रस्तुत शोध से प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण हेतु सांख्यिकी प्रविधियों में 'टी' परीक्षण का प्रयोग किया गया।

3 **शोध उपकरण:** प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए सर्वेक्षण द्वारा आंकडों के संकलन हेतु मानकीकृत उपकरण का प्रयोग किया गया है, जो इस प्रकार है:-

मानकीकृत उपकरण :-उपलब्धि अभिप्रेरणा प्रमापनी (टी. आर. शर्मा द्वारा निर्मित)

परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

उद्देश्य 1 :जनजातीय क्षेत्र की ग्रामीण एवं शहरी बालिकाओं की उपलब्धि अभिप्रेरणाओं का अध्ययन करना।

सारणी संख्या 1: अकादमिक उपलब्धि अभिप्रेरणा का स्तर

	अकादमिक उपलब्धि अभिप्रेरणा			
	मध्यमान	मानकविचलन	N	श्रेणी
ग्रामीण क्षेत्र की जनजातीय बालिकाएँ	23.30	3.66	300	औसत से कम
शहरी क्षेत्र की जनजातीय बालिकाएँ	27.23	4.66	300	औसत
जनजातीय क्षेत्र की कुल बालिकाएँ	25.27	4.62	600	औसत से कम

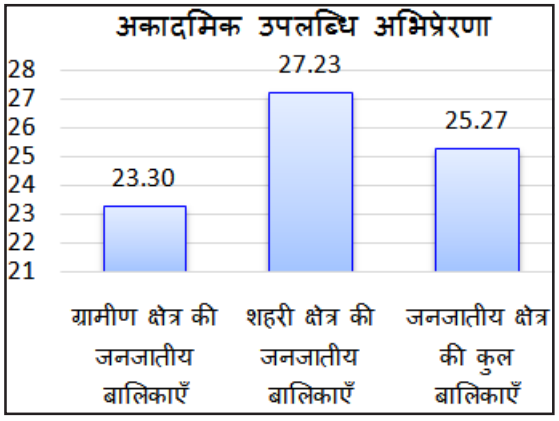

आरेख संख्या 1

अकादमिक उपलब्धि अभिप्रेरणा का स्तर

विश्लेषण –अकादमिक उपलब्धि अभिप्रेरणा के अन्तर्गत ग्रामीण क्षेत्र की जनजातीय बालिकाओं में अकादमिक उपलब्धि अभिप्रेरणा औसत से कम एवं शहरी क्षेत्र की बालिकाओं में औसत अकादमिक उपलब्धि अभिप्रेरणा पायी गई जबकि कुल बालिकाओं में औसत से कम अकादमिक उपलब्धि अभिप्रेरणा का स्तर पाया गया।

उद्देश्य सं. 2. जनजातीय क्षेत्र की ग्रामीण एवं शहरी बालिकाओं की उपलब्धि अभिप्रेरणाओं में तुलना करना।

सारणी संख्या 2: ग्रामीण क्षेत्र एवं शहरी क्षेत्र की जनजातीय बालिकाओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा के मध्यमानों के अन्तरों की सार्थकता की गणना

	अकादमिक उपलब्धिअभिप्रेरणा	
	ग्रामीण क्षेत्र की जनजातीय बालिकाएँ	शहरी क्षेत्र की जनजातीय बालिकाएँ
मध्यमान	23.303	27.227
मानक विचलन	3.658	4.656
N	300	300
मध्यमान की मानकत्रुटि	0.211	0.269
मध्यमान अन्तर	3.923	
'टी' मान	11.476	
P मान	0.000	

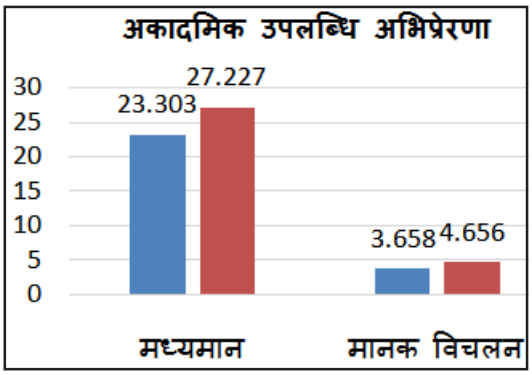

आरेख संख्या 2

ग्रामीण क्षेत्र एवं शहरी क्षेत्र की जनजातीय बालिकाओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा के मध्यमानों के अन्तरों की सार्थकता की गणना

विश्लेषण –अकादमिक उपलब्धि अभिप्रेरणा के अन्तर्गत ग्रामीण क्षेत्र की जनजातीय बालिकाओं का मध्यमान 23.303 तथा शहरी क्षेत्र की जनजातीय बालिकाओं का मध्यमान 27.227 प्राप्त हुआ। 'टी' का मान 11.476 प्राप्त हुआ जो कि 0.01 स्तर पर सार्थक है तात्पर्य है कि ग्रामीण क्षेत्र की जनजातीय बालिकाओं एवं शहरी क्षेत्र की जनजातीय बालिकाओं केअकादमिक उपलब्धि अभिप्रेरणा में सार्थक अन्तर होता है, मध्यमान अंकों को देखने पर स्पष्ट होता है कि ग्रामीण क्षेत्र की जनजातीय बालिकाओं एवं शहरी क्षेत्र की जनजातीय बालिकाओं की तुलना में शहरी क्षेत्र की जनजातीय बालिकाओंमें अकादमिक उपलब्धि अभिप्रेरणा के अन्तर्गत अधिक होता है।

परिकल्पना सं. 1: जनजातीय क्षेत्र की ग्रामीण व शहरी बालिकाओं की उपलब्धि अभिप्रेरणाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

निष्कर्ष :–अत: शून्य परिकल्पना के अस्वीकृति की अवधारणा सिद्ध होती है। इसलिए ग्रामीण क्षेत्र की जनजातीय बालिकाओं एवं शहरी क्षेत्र की जनजातीय बालिकाओं के उपलब्धि अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अन्तर नहीं है, अस्वीकृत होती है। अत: कहा जा सकता है कि ग्रामीण क्षेत्र की जनजातीय बालिकाओं एवं शहरी क्षेत्र की जनजातीय बालिकाओं के उपलब्धि अभिप्रेरणा के मध्यमानों में सार्थक अन्तर है।

शोध से प्राप्त निष्कर्ष – प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्राप्त दत्तों का विश्लेषण करने के पश्चात् पाया कि ग्रामीण क्षेत्र की जनजातीय बालिकाओं में अकादमिक उपलब्धि अभिप्रेरणा औसत से कम पाई गई। जबकि शहरी क्षेत्र की जनजातीय बालिकाओं में अकादमिक उपलब्धि अभिप्रेरणा औसत पाई गई।कुल जनजातीय बालिकाओं में अकादमिक उपलब्धि अभिप्रेरणा औसत से कम पाई गई।

निष्कर्ष यह पाया कि शहरी क्षेत्र की जनजातीय बालिकाओं में अकादमिक उपलब्धि अभिप्रेरणा ग्रामीण क्षेत्र की जनजातीय बालिकाओं से अधिक है।ग्रामीण क्षेत्र की जनजातीय बालिकाओं एवं शहरी क्षेत्र की जनजातीय बालिकाओं के अकादमिक उपलब्धि अभिप्रेरणा में सार्थक अन्तर पाया गया है। वास्तव में शहरी क्षेत्र में प्रतिस्प्रद्धा अधिक होने से बालिकाऐं एक–दूसरे से अधिक प्रभावित होती है और अपनी उपलब्धियों से भी हमेषा आगे बढ़ने का पूरा प्रयास करती है। शहरी क्षेत्र में संचार के साधन के साथ–साथ विज्ञापन की अधिकता होने से बालिकाऐं उपलब्धियों को प्राप्त करने के लिए प्रेरित होती हैं। साथ ही छोटी सी उपलब्धि अगली बडी उपलब्धि को प्राप्त करने में सहयोग प्रदान करती है। अत: शहरी बालिकाओं में उपलब्धि अभिप्रेरणा अधिक पायी गयी।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. पाण्डेय, डॉ. रामशकल (2014),'विश्व के श्रेष्ठ शिक्षाशास्त्री', श्री विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
2. व्यास, डॉ. भगवतीलाल (2016),'समकालिन भारत और शिक्षा', राधा प्रकाशन प्रा. लि., आगरा।
3. कपिल, एच.के. (2007)'अनुसंधान विधियाँ', एच.पी. भार्गव बुक हाउस 4/230, कचहरी घाट, आगरा
4. कपिल, एच.के. (2010) 'सांख्यिकी के मूल तत्व', अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा–2
5. Berman, P. & McLaughlin, M. (1978) Implementation of education innovation. Educational Forum, 40 (3) 345-370

****